2015

Aarhat Multidisciplinary International Research Journal (AMIERJ)

ISSN 2278-5655

(Bi-Monthly)

Peer-Reviewed Journal

Impact factor: 0.948

Chief-Editor

Ubale Amol Baban

[Editorial/Head Office: 108, Gokuldham Society, Dr.Ambedkar chowk, Near TV Towar,Badlapur, MSief

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ) (Bi-Monthly)
Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues IV
June-July- 2015 ISSN 2278-5655

मराठी संज्ञाओं का संदर्भ आधारित विसंदिग्धीकरण

Context Based Disambiguation of Marathi Nouns

marathi subject

नितीनकुमार जानबाजी रामटेके
पीएच.डी. भाषा प्रौद्योगिकी
म. गां. अं. हिं. विवि., वर्धा (महाराष्ट्र)

मराठी में शब्दभेदों के संबंध में विचार का प्रारंभ 'नाम' से शुरू होता है। 'संज्ञा' को मराठी में 'नाम' कहा जाता है। मराठी में 'नाव' का मतलब 'नाम' (संज्ञा) है। 'संज्ञा' शब्दों का सबसे बड़ा वर्ग है।

एक ही शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न स्थलों पर विभिन्न अर्थों में किया जाता है। एक ही शब्द से अनेक वस्तुओं या भाव आदि के बोध करने की व्यावहारिक अनिवार्यता और प्रयत्नलाघव (Economy of effort) की प्रवृत्ति एवं प्रक्रिया से ही शब्द अनेकार्थी बन जाते हैं।

जब एक शब्द में अनेक अर्थ हों और वे परस्पर असंबद्ध हों तो, शब्द अनेकार्थक हो जाता है। प्रयोक्ता शब्द का प्रयोग किस उदेश्य से कर रहा है या कौन सा अर्थ उसे अभिप्रेत है, यह जानकर ही उसके अर्थ को समज सकते हैं और यह विशेषतः देश, काल, प्रसंगादि पर निर्भर करता है।अनेकार्थकता जहाँ होती है वहां संदिग्धार्थकता होती है।

'संदिग्धार्थकता' के अर्थ को अच्छी तरह से समझने के लिए इसके विपरीत/विलोम अर्थ की सहायता से मदद मिलती है -जिसका विलोम अर्थ है -असंदिग्धार्थकता (Unambiguous) जो पूर्णतः स्पष्ट है और जिसका केवल एक ही अर्थ है। कहा जा सकता है कि "किसी भाषिक प्रयोग (शब्द, वाक्य आदि) का एक से अधिक अर्थ होना संदिग्धार्थकता है।"

'संदिग्धार्थकता' शब्द को अंग्रेजी में 'Ambiguity' कहा जाता है।

मराठी में संज्ञा-संज्ञा, संज्ञा-क्रिया और संज्ञा-विशेषण आदि के संदर्भ में संदिग्धार्थकता दिखाई देती है। संज्ञा-संज्ञा के संदर्भ में देखा जाए तो, एक ही संज्ञा एक संदर्भ में पुल्लिंग तो दूसरे संदर्भ में भी पुल्लिंग, एक ही संज्ञा एक संदर्भ में स्त्रीलिंग तो दूसरे संदर्भ में नपुंसकलिंग, इसीतरह संज्ञा-विशेषण, संज्ञा-क्रिया आदि के संदर्भ में भी देखा जा सकता।

संज्ञा-संज्ञा की संदिग्धार्थकता निम्नलिखित हैं-

- मी त्यांना **मान** दिला. (मैंने उनको मान दिया।)
- मी **हार** घातला. (मैंने हार पहनाया।)
- कमलबाईंना **हार** पत्करावी लागली. (कमल बाई को हार स्वीकारणी पड़ी।)
- मी **हार** विकत घेतले. (मैंने हार खरीद लिए।)
- मी त्यांच्यासमोर **मान** वाकवली. (मैंने उनके सामने गर्दन झुकाई।)

संदर्भ आधारित विसंदिग्धीकरण (Context based Disambiguation) क्या है यह जानने से पहले संदर्भ (Context) क्या है यह जानना जरूरी है-
संदर्भ का मतलब तथ्यों या स्थितियों का समुच्चय जो विशेष परिस्थिति या घटना आदि से घिरा हुआ हो।

"निकटस्थ भाषाई परिवेश जिसके आसपास वह विशेष शब्द आया हुआ हो जिससे उसके अर्थ को समझने में आसानी होती है, वह उस शब्द का संदर्भ है"

कहा जा सकता है कि "ऐसा शब्द जो किसी निश्चित शब्द या पदबंध के साथ प्रयुक्त किया जाता है, जिससे उसके अर्थ को समझने में आसानी होती है, वही उसका संदर्भ है।"

विसंदिग्धीकरण (Disambiguation) शब्द को हम 'Dis' और 'Ambiguation' में तोड़ते हैं तो, हमें 'Dis' का अर्थ 'Not' (नहीं) और 'Ambiguous' का अर्थ 'संदिग्धार्थक' और अंत में लगा हुआ प्रत्यय 'tion' संज्ञा बनाता है।

तो हम कह सकते हैं कि Disambiguation (विसंदिग्धीकरण) का हिंदी में अर्थ संदिग्धार्थक नहीं, वह विसंदिग्धीकरण है।

जो वस्तु चाहे वह विचार, भावना, मत आदि हो, वह अगर स्पष्ट नहीं है तो, उसमें संदिग्धार्थकता है। विसंदिग्धीकरण को हम ऐसे भी कह सकते हैं कि वह दो या दो से अधिक वस्तुओं, विचार, भावना, मत आदि में चयन की प्रक्रिया हैं।

विभिन्न अर्थों में से संदर्भ के अनुसार उपयुक्त अर्थ का चयन कर संदिग्धार्थकता को दूर करना ही विसंदिग्धीकरण है। विसंदिग्धीकरण, संगणक की ऐसी क्षमता है, जो संदर्भ के आधार पर शब्द के सही अर्थ की पहचान (चयन) करता है।
अर्थ की संदिग्धार्थकता को दूर करना ही विसंदिग्धीकरण है।
'विसंदिग्धीकरण' प्राकृतिक भाषा संसाधन का सबसे महत्वपूर्ण विषय है।
निम्नलिखित संदर्भ के माध्यम से उपर्युक्त संदिग्धार्थकता को दूर किया जा सकता हैं-

- ✓ **AW**+VM+VAUX. ⇨ AW**=NN**

- वाक्य में संदिग्धार्थक शब्द के बाद क्रिया सकर्मक (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग/बहुवचन 'ए') है तो, ऐसे संदर्भ में संदिग्धार्थक शब्द संज्ञा होगी। संदिग्धार्थक शब्द के (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग 'ए' /बहुवचन 'ए') लिंग, वचन के आधार पर क्रिया के लिंग, वचन (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग 'ए' /बहुवचन 'ए') के रूप में परिवर्तन होता है।

AW +VM(आ) ⟹ AW=**NN (पुल्लिंग)**
AW +VM(स्त्री) ⟹ AW=**NN (स्त्रीलिंग)**
AW+VM(बहुवचन) ⟹ AW= **NN (बहुवचन)**

निष्कर्ष :

भाषा में ऐसे शब्द भी प्रयुक्त होते हैं, जो दिखने में समान (समान उच्चारण एवं वर्तनी) हो परंतु उनका अर्थ संदर्भानुसार अलग होता है। एक ही शब्द, एक से ज्यादा संदर्भों में प्रयुक्त होकर संदिग्धार्थकता (अर्थ को समझने में कठिनाई) उत्पन्न करता है। संदिग्धार्थक शब्द के साथ प्रयुक्त हुए शब्दों, शब्दों पर संदिग्धार्थक शब्द के लिंग, वचन का प्रभाव, एवं शब्दों में जुड़े विभक्ति चिन्हों आदि की मदद से, संदिग्धार्थक शब्द के अर्थ को समझने में मदद मिलती है। संदिग्धार्थक शब्द के संदर्भ से उसके सटीक अर्थ को जानना ही संदर्भ आधारित विसंदिग्धीकरण है।

संक्षिप्त शब्द

AW=AMBIGUOUS WORD
NN=NOUN
VM=MAIN VERB
VAUX =AUXILLARY VERB

Reference:

- ओझा त्रिभुवन (1994), *हिंदी में अनेकार्थकता का अनुशीलन,* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- रस्तोगी कविता (2000). *समसामयिक भाषाविज्ञान*. लखनऊ, सुलभ प्रकाशन.
- **Agirre Eneko** (2006). *Word Sense Disambiguation Algorithms & Applications.* UK : Sharp Laboratories of the Europe, Basque Country and Philip Edmonds, University of the Basque country.
- **Burton-Roberts Noel** (1989). *Analysis Sentences (An Introduction to English Syntax).* England Longman house, Burnt Mill, Harlow.
- **Chaudhari Barnali** (2007), *Improvement of English-Hindi Anusaaraka MT output with reference to Word Sense Disambiguation of 25 most frequent English Verbs.* Mphil Dissertation submitted, Applied Linguistics, University of Hyderabad.
- **Darbari Hemant, Sangal Rajiv, Sharma Dipti**, Editor (2008). *Natural Language Processing.* ICON.
- **Dowty David R., Karttunen Lauri, Zwicky Arnold M.**, Edited (1985) *Natural Language Parsing Psychological, Computational and theoretical Perspective*. Cambridge University Press.
- **Elbourne Paul** (2011). *Meaning A Slim Guide to Semantics*. Newyork:Oxford University Press.
- **Gilhooly k. G.** Edited (1989). *Human & Machine Problem Solving*. NewYork: Plenlam press.
- http://dictionary.reference.com/browse/context
- http://www.skase.sk/Volumes/JTL12/pdf_doc/2.pdf
- http://www.wsdbook.org/chapter1.html